IJAER/ September-October 2023 /Volume-12/Issue-5 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

निजी क्षेत्र के बैंको में गृह ऋण के वितरण ,वसूली व मांग की स्थिति का वित्तीय मूल्यांकन- जयपुर शहर के संदर्भ में

Hemraj Gupta
Research Scholar, Maharaj Vinayak Global University, Jaipur

Dr. Gurupreet Kaur
Research Guide, Maharaj Vinayak Global University, Jaipur

सार

हाउसिंग फाइनेंस कंपनी के संदर्भ में ग्राहकों द्वारा प्रदान की गई ग्राहकों की संतुष्टि और बैंकिंग रेटिंग को समझने और कंपनी द्वारा प्रदान किए गए होम लोन के प्रति ग्राहकों की संतुष्टि को प्रभावित करने वाले कारकों का पता लगाने के लिए शोध किया जाता है। प्रत्येक व्यक्ति को, उनकी परिस्थितियों की परवाह किए बिना, घर बुलाने के लिए एक सुरक्षित और आरामदायक स्थान की आवश्यकता होती है। यह परिवारों को घर बुलाने के लिए एक स्थान के रूप में अच्छी तरह से काम करता है। बहुत से लोग अपना पैसा घर खरीदने के लिए चुनते हैं क्योंकि यह दैनिक जीवन का एक अनिवार्य घटक और भविष्य के लिए एक संपत्ति दोनों है। हालांकि, आज के बाजार में, एक परिवार के लिए मध्यम वर्ग का होना संपत्ति खरीदना काफी चुनौतीपूर्ण है क्योंकि कीमतें इतनी अधिक हैं। परिणामस्वरूप, सरकार ने लोगों के जीवन को आसान बनाने के लिए हर व्यक्ति को सस्ती ब्याज दर पर हाउस लोन की सुविधा उपलब्ध कराई है।

मुख्य शब्द *बैंको में गृह ऋण, वसूली व मांग की स्थिति।*

प्रस्तावना

एक बंधक ऋण एक महत्वपूर्ण दीर्घकालिक प्रतिबद्धता का प्रतिनिधित्व करता है जो आवश्यक है। पिछले दस वर्षों में बंधक ऋणों की मांग में तेजी से वृद्धि हुई है। इस वृद्धि के कारणों को समझना मुश्किल नहीं है और इसमें वैश्वीकरण और विकसित अर्थव्यवस्थाओं के साथ एकीकरण के कारण मानसिकता में बदलाव शामिल है, जहां बंधक वित्तपोषण का प्रमुख रूप है, केंद्रीय बजट में आयकर छूट और युवाओं की क्षमता में पर्याप्त वृद्धि भारतीय उनके लिए आय उत्पन्न करने के लिए। नतीजतन, आवास ऋण के लिए बाजार की वर्तमान स्थिति विकास के एक स्वस्थ स्तर को प्रकट करती है और एक आशावादी भविष्य की ओर इशारा करती है। बैंकों और हाउसिंग फाइनेंस संगठनों सहित कई वित्तीय संस्थान हैं जो कम ब्याज दरों के साथ किफायती बंधक प्रदान करते हैं। सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रों में बैंकों द्वारा उपलब्ध कराए गए गृह ऋण कार्यक्रम काफी प्रतिस्पर्धी हैं। जब आवास ऋण की बात आती है तो अधिकांश लोग अपना व्यवसाय बैंकों को सौंप देते हैं जो सार्वजनिक क्षेत्र का हिस्सा हैं। यह ज्यादातर इस तथ्य के कारण है कि वे इन संस्थानों को सुरक्षित मानते हैं और इन बैंकों द्वारा दी जाने वाली ब्याज दरें अधिक अनुकूल हैं। दूसरी ओर, हमारे देश में निजी क्षेत्र के बैंक लगातार स्थापित हो रहे हैं, और इन बैंकों द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाओं और सुविधाओं के प्रत्यक्ष परिणाम के रूप में हमारे देश के युवा लोगों की प्राथमिकताएं बदल रही हैं। ऋण के लिए आवेदन करने से पहले, ग्राहक को बंधक और गृह ऋण से जुड़े प्रत्येक वाक्यांश की ठोस समझ होनी चाहिए। यह अकेला सबसे महत्वपूर्ण कदम है। होम परचेज़ लोन, होम इम्प्रूवमेंट लोन, होम कंस्ट्रक्शन लोन, होम एक्सटेंशन लोन, होम कन्वर्जन लोन, लैंड परचेज़ लोन, ब्रिज लोन और मॉर्गेज लोन कुछ ऐसे होम लोन हैं जो पब्लिक और प्राइवेट दोनों सेक्टर के बैंकों में उपलब्ध हैं। इन ऋणों को व्यक्तिगत ग्राहकों की विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए तैयार किया जा सकता है।

हाउसिंग फाइनेंस और हाउसिंग फाइनेंस सिस्टम की अवधारणा समय के साथ विकसित हो रही है। लोइक चिक्विर और माइकल ली के अनुसार, "आवास वित्त जटिल और बहु-क्षेत्रीय मुद्दों को एक साथ लाता है जो स्थानीय विशेषताओं, जैसे देश के कानूनी वातावरण या संस्कृति, आर्थिक संरचना, नियामक वातावरण, या राजनीतिक प्रणाली को लगातार बदलते रहते हैं"। आवास की मांग दिन-ब-दिन बढ़ी है। हाउसिंग फाइनेंस समान आर्थिक विकास के इंजन के रूप में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, हालांकि गरीबी को कम करता है और अर्थव्यवस्था में स्लम प्रसार को रोकता है। बढ़ती आवास मांग को पूरा करने के लिए सरकार को लोगों को आवास के लिए वित्त प्रदान करने की आवश्यकता है। भारत में हाउसिंग फाइनेंस सेक्टर ने अपनी संरचना में अभूतपूर्व बदलाव का अनुभव किया है, क्योंकि यह पूरे भारत में बड़ी संख्या में फाइनेंसिंग संस्थाओं के साथ एक बहुत ही प्रतिस्पर्धी क्षेत्र के लिए एक पूरी तरह से एक सरकारी उपक्रम होने का चरण है। सभ्यता के प्रारंभ से ही मानव जाति के नैतिक और पदार्थ विकास के लिए घर केंद्र और घरेलू उपकरण है। आवास सबसे महत्वपूर्ण में से एक है जिसकी हम मनुष्यों को आवश्यकता है। गरिमा के साथ मानव अस्तित्व के लिए पर्याप्त आवास आवश्यक है। अच्छी गुणवत्ता वाले आवास के बिना ऐसी बहुत सी चीज़ें हैं जो हमारे लिए असंभव नहीं तो कठिन होंगी। आवास की कमी एक सार्वभौमिक घटना है। विकासशील देशों में यह अधिक तीव्र है। हाल के वर्षों में भारत में आवासीय परिदृश्य और भी गंभीर हो गया है। भारत ने इतने सारे आवास सुधारों की शुरुआत की है, जिसने सामाजिक आवंटन में कमी, सार्वजनिक धन में कटौती और राज्य और निजी अभिनेताओं के बीच घनिष्ठ साझेदारी में एक अचल संपत्ति संस्कृति को बढ़ावा देने की विशेषता वाले कई रूपों और अभिव्यक्तियों को लिया है। कई देशों में किफायती आवास बाजारों को प्रोत्साहित करने और आवास की गुणवत्ता में सुधार करने में बंधक वित्तपोषण बाजार महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। दुर्भाग्य से, ये अभी भी भारत में शैशवावस्था में हैं। विकास की यह कमी अक्सर निम्न गृहस्वामी दर या खराब आवास गुणवत्ता में तब्दील हो जाती है। इनमें से अधिकांश समस्याएँ केंद्रीय दुविधा से उत्पन्न होती हैं कि संसाधन हमेशा बहुत सीमित होते हैं और आवास विकास अपनी दैनिक वित्तीय आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए वित्त की आपूर्ति के लिए बैंकों, क्रेडिट निगमों और विकास बैंकों जैसे वित्तीय संस्थानों पर बहुत अधिक निर्भर करता है।

ग्राहकों की जरूरतों को पूरा करने के लिए विभिन्न प्रकार के होम लोन उपलब्ध हैं, जैसे:

- गृह खरीद ऋण,
- गृह सुधार ऋण,
- गृह निर्माण ऋण,
- गृह विस्तार ऋण,
- गृह रूपांतरण ऋण,
- भूमि खरीद ऋण; पुल

गृह ऋण के लाभ

ग्राहकों को मिलने वाले होम लोन के विभिन्न लाभ हैं:

- एक घर के मालिक होने में मदद

- आवास ऋण पर कर लाभ
- आकर्षक ब्याज दरें
- लंबी अवधि के ऋण
- उधारकर्ता की अर्जन क्षमता के आधार पर चुकौती अनुसूची
- ज्वॉइंट लोन की सुविधा और होम लोन देने वाले बैंक को भी फायदे हैं.
- इसके अलावा, चूंकि इस ऋण का बड़ा हिस्सा व्यक्तिगत संपत्तियों के बंधक के खिलाफ दिया जाता है, डिफ़ॉल्ट की प्रवृत्ति कम होती है। ऋण और अग्रिम पोर्टफोलियो के कुशल प्रबंधन ने अधिक महत्व ग्रहण कर लिया है क्योंकि यह बैंक की सबसे बड़ी संपत्ति है जिसका इसकी लाभप्रदता पर सीधा प्रभाव पड़ता है।

गृह ऋण के नुकसान

होम लोन के मुख्य नुकसान नीचे दिए गए हैं:

- उच्च प्रसंस्करण शुल्क
- प्रसंस्करण में देरी
- उतार-चढ़ाव वाली ब्याज दर
- संवितरण में समस्या

ग्राहकों को अच्छी, शीघ्र और कुशल सेवाएं प्रदान करके उपर्युक्त नुकसान या सीमाओं को दूर किया जा सकता है।

एक संपत्ति का अधिग्रहण, जिसकी प्राप्ति प्रत्येक व्यक्ति का उद्देश्य है, बंधक ऋण के उपयोग की आवश्यकता होती है। इस ऋण की अधिक विस्तारित चुकौती अवधि है। गृह ऋण प्राय: संपत्ति के मूल्य के 80% से 90% के लिए स्वीकृत किए जाते हैं, हालांकि यह प्रतिशत कभी-कभी 90% तक भी जा सकता है। इसके अलावा, भारत में बैंकों की दो श्रेणियां हैं, जिन्हें क्रमशः सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक और निजी क्षेत्र के बैंक कहा जाता है। जिन बैंकों को सार्वजनिक क्षेत्र का हिस्सा माना जाता है, वे वे हैं जिनके पास पचास प्रतिशत से अधिक की सरकारी स्वामित्व वाली हिस्सेदारी है। जिन बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया गया है उन्हें सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के रूप में जाना जाता है। जिन बैंकों को निजी क्षेत्र का हिस्सा माना जाता है, वे वे होते हैं जिनकी शेयरधारिता निजी शेयरधारकों के पास होती है। भारत में कुल 49 वित्तीय संस्थान हैं, जिनमें से 29 निजी क्षेत्र से और 27 सार्वजनिक क्षेत्र से हैं।

सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक: केंद्र सरकार द्वारा प्रबंधित वित्तीय संस्थानों को सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक कहा जाता है। जिन बैंकों का स्वामित्व और संचालन सरकार द्वारा किया जाता है, उन्हें अक्सर सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक कहा जाता है। एक राष्ट्रीयकृत बैंक की स्थापना के परिणामस्वरूप होने वाली प्रक्रिया एक बैंक के स्वामित्व और उसकी सभी संपत्तियों का सरकार को हस्तांतरण है।

निजी क्षेत्र के बैंक: ये निजी ऋणदाता ही उनके मालिक हैं। उसी तरह, निजी बैंक निजी प्रमोटरों द्वारा चलाए जाते हैं जिन्हें बाजार की मांगों के अनुसार संचालन की देखरेख करने का अधिकार दिया जाता है। ज्यादातर लोगों के दिमाग में, निजी बैंकों को अंतरराष्ट्रीय निगमों के रूप में माना जाता है जो दूसरे देशों में कारोबार करते हैं। ये वित्तीय संस्थान उचित ब्याज दरों पर ऋण उपलब्ध कराते हैं। वर्तमान समय में, भारत में 21 निजी बैंक कार्यरत हैं। निजी मालिक निजी बैंकिंग संस्थानों पर अधिकार का प्रयोग करते हैं। भारतीय कंपनी अधिनियम के अनुसार प्रत्येक निजी बैंक को अपना पंजीकरण कराना अनिवार्य है। नवीनतम तकनीक निजी बैंकों में उपलब्ध है।

उद्देश्य :

1. HDFC एवं ICICI बैंक की भूमिका, कार्य प्रणाली, सम्भावनाएँ, चुनौतियाँ एवं लोगों की सक्रिय सहभागिता एवं पारदर्शी सेवा के लिये आवश्यक सुधार आदि का अध्ययन करना ।

2. आधुनिक तकनीक द्वारा HDFC एवं ICICI बैंक की कमियाँ दूर करके अच्छा वातावरण तैयार करना ।

शोध प्रविधि

"शोध" शब्द का उपयोग अब ज्ञान की प्रत्येक शाखा के गहन अध्ययन करने के लिये हो गया है। शोध को आंग्ल भाषा में "रिसर्च" कहा जाता है। रिसर्च में 'रि' शब्दांश पुनः तथा 'सर्च' शब्दांश खोज का समानार्थी है । इस प्रकार रिसर्च का अर्थ है प्रत्यनों की गहन खोज। शोध शब्द का ठीक से अर्थ समझने के लिये विभिन्न विद्वानों द्वारा शोध की परिभाषा दी है। श्री रैकवन तथा योरी के अनुसार "नवीन ज्ञान की प्राप्ति के लिये किया गया कार्य शोध है ।" चैपलिन के अनुसार - " शोध का तात्पर्य वह प्रविधियाँ हैं, जिनका उपयोग ज्ञान की खोज में वैज्ञानिकों द्वारा किया जाता है ।"

पी. बी. यंग के अनुसार - " शोध एक वैज्ञानिक योजना है जिसका उद्देश्य तार्किक तथा क्रमबद्ध पद्धतियों के द्वारा नवीन तथ्यों का अन्वेषण अथवा पुराने तथ्यों को पुनः परीक्षा एवं उनमें पाये जाने वाले अनुक्रमों, अन्तः सम्बन्धों, कारण सहित व्याख्याओं तथा उनको संचालित करने वाले स्वाभाविक नियमों का विश्लेषण करना है ।'

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि शोध वह वैज्ञानिक विधि है जिसके द्वारा घटनाओं व समस्याओं के कारणों, अन्तः सम्बन्धों तथा उनमें अन्तर्निहित प्रक्रियाओं का अध्ययन, विश्लेषण व निरूपण किया जाता है। शोध जीवन का वैज्ञानिक अनुसंधान है। जिस प्रकार विधाता की सर्वोत्तम सृष्टि मानव है, उसी प्रकार मानव की सर्वोत्तम सृष्टि मानव–समाज व उसकी विचित्र घटनाएँ है । यह मानव बुद्धिजीवी है, जिज्ञासा से भरपूर ज्ञानपिपासु है । इसलिये यह सच ही कहा गया है कि मानव 'प्रकृति' का सबसे आश्चर्यजनक भाग है। यह बुद्धिजीवी, ज्ञानपिपासु मानव केवल प्रकृति का ही नहीं, स्वयं अपना भी अध्ययन करता है । आकाश, धरती, पेड़-पौधे, पक्षी, नदी और समुद्र का अध्ययन उसके सम्मुख अनेक आश्चर्यजनक अनुभवों को उपस्थित करता है और उसके ज्ञान - विज्ञान के भण्डार को भरता रहता है, परन्तु स्वयं अपना, अपने समाज का, अपने व्यवहारों का या फिर घटनाओं का अध्ययन मानव के लिये और भी रोचक, अत्यन्त आश्चर्यजनक अनुभवों से भरपूर और अनेक अनोखेपन से समृद्ध होता है पर यह अध्ययन मनमाने ढंग से नहीं अपितु निरीक्षण, परीक्षण व प्रयोग पर आधारित वैज्ञानिक पद्धति के द्वारा किये जाने पर ही सत्य को ढूँढ़ा जा सकता है । घटनाओं के सम्बन्ध में सत्य की खोज ही शोध है ।

मानव क्रिया के सभी क्षेत्रों में शोध का अर्थ ज्ञान तथा बोध की निरन्तर खोज है । परन्तु यही ज्ञान का बोध वैज्ञानिक होते है, जिनमें वैज्ञानिक शोध के दो आवश्यक तत्व अवश्य विद्यमान हों इनमें से प्रथम तत्व है निरीक्षण इसके द्वारा प्रत्यक्ष

रूप से देखकर हम कतिपय तथ्यों के विषय में ज्ञान प्राप्त करते हैं। दूसरा तत्व है कारण दर्शाना, जिसके द्वारा इस तथ्यों का अर्थ, उनका पारस्परिक सम्बन्ध एवं विद्यमान वैज्ञानिक ज्ञान से उसका सम्बन्ध निश्चित किया जाता है। यही दोनों तत्व यदि सामाजिक तथ्यों के संबंध में किये गये अनुसंधान में विद्यमान है तो उसे शोध - प्रविधि कहते हैं । इस दृष्टिकोण से शोध का अर्थ किसी समस्या को सुलझाने या किसी प्राकल्पना की परीक्षा नवीन घटनाओं को खोजने या कतिपय घटनाओं के बीच नवीन सम्बन्धों को ढूढ़ने के उद्देश्य से किसी यथार्थ विधि का उपयोग है। यह यथार्थ विधि इस प्रकार की होनी चाहिये जो कि वैज्ञानिक शर्तों को पूरी करती हो तथा जिसकी सहायता से अनुसंधान किये गये विषय का सत्यापन सम्भव हो ।

परिणाम और चर्चा

HDFC एवं ICICI बैंक की जमा एवं ऋण राशि में वृद्धि, जमा ऋण अनुपात, कृषि एवं संबंधित क्षेत्र, औद्योगिक क्षेत्र, सेवा क्षेत्र व असंगठित क्षेत्र हेतु वार्षिक कार्य योजना के तहत लीड बैंक द्वारा प्रदत्त निर्धारित लक्ष्य एवं प्राप्त उपलब्धि का प्रतिशत तथा इन सभी क्षेत्रों में प्रदत्त ऋणों का वर्षबार ब्यौरा तथा परिणाम की व्याख्या हेतु औसत माध्य व सह-संबंध गुणांक का प्रयोग करके मौलिकता लाने का प्रयास किया गया है। परिणाम व विवेचना की दृष्टि से इस अध्याय को निम्न भागों में बांटा गया है-

- HDFC एवं ICICI बैंक में जमा राशि का वर्षवार ब्यौरा,
- HDFC एवं ICICI बैंक द्वारा प्रदत्त ऋणों का वर्षवार ब्यौरा,
- जबलपुर संभाग में HDFC एवं ICICI बैंक की जमा राशि व प्रदत्त ऋणों का अनुपात (प्रतिशत रूप में),
- कृषि एवं संबंधित क्षेत्र, औद्योगिक क्षेत्र, सेवा क्षेत्र व असंगठित क्षेत्र के विकास के लिए निर्धारित लक्ष्य एवं उपलब्धि व उसके प्रतिशत का वर्षवार ब्यौरा,
- जबलपुर संभाग में HDFC एवं ICICI बैंक द्वारा कृषि व संबंधित क्षेत्र, औद्योगिक क्षेत्र, सेवा क्षेत्र व असंगठित क्षेत्र को प्रदत्त ऋणों का वर्षवार ब्यौरा

निष्कर्ष

बैंक अधुनिक अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी हैं। वित्त एवं साख से संबंधित कारोबार बैंकों द्वारा संचालित होता है। अतः बैंक को सुदृढ़ एवं सुचारु रूप से बनाये बिना आर्थिक विकास की कल्पना नहीं की जा सकती। आर्थिक विकास के साथ - साथ बैंकिंग क्षेत्र में अनेक परिवर्तन हुए, बैंकों का राष्ट्रीयकरण फिर 1991 का विश्वव्यापीकरण, उदारीकरण एवं निजीकरण बैंकिंग व्यवसाय में सुधार लाने का एक महत्वपूर्ण कदम कहा जा सकता है। आज समाज में दोनों क्षेत्र के बैंक प्रतियोगिता के माध्यम से अपने कारोबार को बढ़ाने में संलग्न है । जिसका सीधा लाभ समाज के विभिन्न वर्गों को मिल रहा है। यदि किसी व्यक्ति का कार्य सार्वजनिक बैंक द्वारा नहीं होता है तो उसे निजी क्षेत्र के बैंक पूरा कर देते हैं। जिससे बैंकिंग सुविधाओं का लाभ लेने से कोई व्यक्ति वंचित न रह जाये। अनेक कमियों, दोषों एवं कठिनाइयों के वावजूद बैंकिंग क्षेत्र में निजी क्षेत्र के बैंकों की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता। आज समाज का हर व्यक्ति बैंक की सेवाओं से लाभान्वित हो रहा है। बैंक की विभिन्न योजनाएँ चाहे वे जमा योजनाएँ हो या साख संबंधी हो । हर व्यक्ति किसी न किसी प्रकार से इसका लाभ उठा रहा है ।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. देसाई, वसंत (2009), "द इंडियन फाइनेंशियल सिस्टम एंड डेवलपमेंट", हिमालय पब्लिशिंग हाउस।
2. खान, एम.वाई, "वित्तीय संस्थान और बाजार संरचना, विकास और नवाचार, तीसरा संस्करण।
3. कोहली, वी.के., (2017), "हाउसिंग फाइनेंस एजेंसियां इन इंडिया", आईएसबीएन 81-7629-971-5।
4. कोठारी, सी.आर. "अनुसंधान पद्धति, तरीके और तकनीक" -2017।
5. मैरिस, डी.पी., "तपेदिक का नियंत्रण और उन्मूलन", पी-246।
6. पंजाबी, के.एल. (2020), "शहरी आवास की समस्याएं", संगोष्ठी की रिपोर्ट, भारतीय लोक प्रशासन संस्थान, सचिवालय, बॉम्बे द्वारा आयोजित, पीपी 4
7. पॉटिंगर, एफ.एम., "क्लिनिकल ट्यूबरक्लोसिस", वॉल्यूम: 11, पीपी246।
8. राममूर्ति, टी.आर. (2018), "आवास वित्त, बैंकों और वित्तीय संस्थानों से कैसे उधार लें"।
9. रॉबर्टसन, जॉन, "हाउसिंग एंड द पब्लिक हेल्थ", कैसल एंड कंपनी लिमिटेड, लंदन, न्यूयॉर्क, टोरंटो और मेलबोर्न, पीपी 12-13।
10. शर्मा, एस.के. (2019), "भारत में आवास वित्त प्रणाली का अवलोकन", "भारत में आवास वित्त", खंड 1।
11. श्रीवास्तव बी.के. "बैंकिंग: सिद्धांत और व्यवहार", हिमालया पब्लिशिंग हाउस, बॉम्बे 2016।
12. सुंदरराजन, सुरेंद्र, (2020), "ए बुक ऑफ फाइनेंशियल टर्म्स", ए टाटा मैकग्रा हिल, नई दिल्ली।
13. वर्मा, जे.सी. (2017), "आवास वित्त कंपनियां, गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियां", दूसरा संस्करण।
14. अरुणोदयम, डी. रेजिस, थंगावेल। एन. (2017), "चेन्नई शहर के विशेष संदर्भ में आवास वित्त उद्योग का एक अध्ययन", सामाजिक विज्ञान, वॉल्यूम:2(1), पीपी84-92।
15. अयोतामुनो, ए., ओबिन्ना। वी.सी. (दिसंबर 2015) , "नाइजीरिया में आवास: राष्ट्रीय आवास कोष (एनएचएफ) में नाइजीरियाई लोगों के योगदान का मूल्यांकन", वैज्ञानिक अनुसंधान और शिक्षा का अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, वॉल्यूम: 2, अंक: 12, पीपी 2518-5231।
16. बाबू, जे (2016) "उधारकर्ताओं की आवास वित्त समस्याएं: एलआईसीएचएफएल और एचडीएफसी का एक तुलनात्मक अध्ययन", अमेरिकन-यूरेशियन जर्नल ऑफ साइंटिफिक रिसर्च, 8 (5), पीपी। 234-239।
17. भल्ला, अश्विनी कुमार, अरोड़ा, परविंदर, सिंह गिल, पुष्पिंदर (मार्च 2019), "भारत में आवास वित्त कंपनियों की लाभप्रदता: चयनित एचएफसी का एक द्विभाजित विश्लेषण, जगन्नाथ इंटरनेशनल मैनेजमेंट स्कूल, पीपी 4-9।

18. चड्ढा, पंकज और चावला, वनिता (अप्रैल 2016), "परफॉर्मेंस एनालिसिस एंड बेंचमार्किंग ऑफ सिलेक्टेड लिस्टेड हाउसिंग फाइनेंस कंपनीज इन इंडिया- ए कैमल एप्रोच", इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च इन कॉमर्स एंड मैनेजमेंट, वॉल्यूम: 4, अंक: 4, पीपी 23-30।

19. चांद, मूल और पाल सिंह, राज (सितंबर 2018) "ए क्रिटिकल एनालिसिस ऑफ हाउसिंग शॉर्टेज इन इंडिया", इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च इन कॉमर्स, इकोनॉमिक्स एंड मैनेजमेंट, वॉल्यूम: 2, अंक: 9, पीपी 61-69।

20. चंद्र देब, बिशवजीत और बिस्वास, सुजान कांति और दत्ता, राजीव (2021), "बांग्लादेश के वित्तीय बाजारों के विकास में आवास वित्त कंपनियों का महत्व", व्यापार और प्रबंधन के यूरोपीय जर्नल, वॉल्यूम: 3, संख्या: 4, पीपी 278-291